6.2.2 सैम्युएलसन का सिद्धान्त

लोक व्यय के आधुनिक सिद्धान्त का प्रारम्भ 1954 से माना जाता है जब सैम्युएलसन ने अपने सिर्फ 3 पृष्ठों के लेख *The Pure Theory of Public Expenditure* को प्रकाशित किया। यह लेख लोक व्यय के सिद्धान्त को गणितीय रूप में पेश करता है। एक वर्ष पश्चात् 1955 में इसे ज्यामिति की सहायता से प्रस्तुत किया गया[1] जिस कारण यह अधिक लोगों की पहुंच के अन्दर आ गया।

सैम्युएलसन का कहना है कि सैक्स, विकसेल, लिण्डल, मस्ग्रेव तथा बोवेन को छोड़कर अन्य अर्थशास्त्रियों ने अधिकतम लोक व्यय के सिद्धान्त की उपेक्षा की है तथा अपना अधिकांश समय करारोपण के सिद्धान्त में ही लगाया है। इस कमी को दूर.करने के लिए उन्होंने अधिकतम लोक व्यय के सिद्धान्त को उक्त दो लेखों में प्रस्तुत किया। जिस रूप में इसे सैम्युएलसन ने लिखा उसका विकास इटली, ऑस्ट्रिया तथा स्वीडेन के अर्थशास्त्रियों ने 1880 तथा 1920 के मध्य किया था। किन्तु सैम्युएलसन का सिद्धान्त इन अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्तों से इस अर्थ में भिन्न है कि सैम्युएलसन ने लोक व्यय (अर्थात् सामाजिक वस्तु) के सिद्धान्त को पैरेटो के अधिकतम कल्याण की शर्तों[2] के विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया, बजट नीति के निर्धारण की प्रक्रिया में सुधार के रूप में नहीं। वस्तुत: बजट नीति के निर्धारण की प्रक्रिया से सैम्युएलसन ने कार्यक्षमता (Efficiency) की शर्तों को अलग ही रखा।

सैम्युएलसन के सिद्धान्त की विस्तार से व्याख्या करने के पूर्व उसे संक्षेप में निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है :

सैम्युएलसन के सामने समस्या यह थी कि उस अर्थव्यवस्था में साधनों का आदर्श आबंटन किस प्रकार होता है जहां निजी वस्तुओं के साथ-साथ सार्वजनिक वस्तुओं का भी उत्पादन होता है। निजी वस्तुएं वे हैं जिनका उपभोग अलग-अलग मात्रा में विभिन्न उपभोक्ताओं द्वारा होता है तथा सभी उपभोक्ताओं के अलग-अलग उपभोग

Scanned with CamScanner

का कुल योग ही इन वस्तुओं की कुल उत्पत्ति होती है। सार्वजनिक वस्तुओं का उपभोग सभी उपभोक्ता समान मात्रा में करते हैं। अतः विभिन्न उपभोक्ताओं के अलग-अलग उपभोग को जोड़कर इन वस्तुओं के कुल उत्पादन को प्राप्त नहीं किया जाता है। अव मान लें कि उत्पत्ति सम्भावना सीमा तथा उपभोक्ता अधिमान दोनों प्रकार की वस्तुओं के लिए दिये हुए हैं। इस स्थिति में अधिकतम कल्याण सम्बन्धी पैरेटो द्वारा दी गयी कार्यक्षमता की शर्तों को यहां लागू किया जा सकता है। किन्तु, निजी वस्तुओं के सम्बन्ध में जिन शर्तों को लागू किया जाता है, वे सार्वजनिक वस्तुओं की शर्तों से भिन्न हैं। निजी वस्तुओं के अधिकतम उत्पादन के लिए आवश्यक है कि उत्पादन में रूपान्तर की सीमान्त दर उपभोग में प्रतिस्थापन की सीमान्त दर के बरावर हो तथा प्रतिस्थापन की यह सीमान्त दर सभी उपभोक्ताओं के लिए भी समान हो। सार्वजनिक वस्तुओं की स्थिति में रूपान्तर की सीमान्त दर प्रतिस्थापन की सीमान्त दरों के योग के वरावर होती है तथा प्रतिस्थापन की सीमान्त दर सभी उपभोक्ताओं के लिए समान नहीं होती है, बल्कि अलग-अलग। इन शर्तों के आधार पर कोई एक अधिकतम समाधान नहीं मिलता है वल्कि कई। सामाजिक कल्याण फलन के प्रयोग से सर्वोत्तम समाधान (The optimum of optima) प्राप्त होता है जिसे सैम्युएलसन ने सुखद बिन्दु (Bliss point) कहा है।

सैम्युएलसन के इस सिद्धान्त की अव विस्तार से व्याख्या की जायेगी।

सैम्युएलसन के सिद्धान्त की मान्यताएं

लोक व्यय के सम्बन्ध में सैम्युएलसन के शुद्ध सिद्धान्त को समझने के लिए जरूरी है कि हम इसकी मान्यताओं को समझ लें :

(1) ध्यान देने योग्य पहली बात यह है कि उन्होंने ध्रुवीय स्थितियों (polar cases) को लिया है। निजी उपभोग वस्तु, जैसे—रोटी, उस प्रकार की वस्तु है जिसकी कुल मात्रा का विभाजन दो या अधिक उपभोक्ताओं में सम्भव है। मान लें कि किसी निजी वस्तु की कुल उत्पत्ति X है जिसका विभाजन दो उपभोक्ताओं A तथा B में इस प्रकार होता है कि A इसका उपभोग X_A मात्रा में तथा B का उपभोग X_B मात्रा में होता है तथा $X_A + X_B = X$; सार्वजनिक (लोक) उपभोग वस्तु के सम्बन्ध में सैम्युएलसन की मान्यता यह है कि यह ऐसी वस्तु है जिसकी कुल उत्पत्ति का उपभोग सभी उपभोक्ता समान मात्रा में करते हैं। मान लें कि ऐसी वस्तु का कुल उत्पादन G है तथा A एवं B के द्वारा इसका उपभोग G_A तथा G_B मात्रा में इस प्रकार होता है कि $G_A = G_B = G$. स्पष्ट है कि निजी वस्तु की तरह सार्वजनिक वस्तु की कुल उत्पत्ति को व्यक्तिगत उपभोक्ताओं के व्यक्तिगत उपभोग को जोड़कर प्राप्त नहीं किया जा सकता।

(2) दूसरी मान्यता यह है कि निजी वस्तुओं की मांग के सम्बन्ध में उपभोक्ताओं के अधिमान की जानकारी बाजार द्वारा प्राप्त की जाती है जहां वे अपने अधिमान को व्यक्त करते हैं। सार्वजनिक वस्तुओं का अधिमान इस प्रकार व्यक्त नहीं किया जाता क्योंकि ऐसी वस्तु के प्रत्येक उपभोक्ता के हित में यह होगा कि वह गलत संकेत दे तथा बहाना करे कि उसे इस वस्तु की आवश्यकता नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए सैम्युएलसन ने मान लिया कि एक सर्वज्ञ मशीन (Omniscient Calculation Machine) है जिसे सार्वजनिक वस्तु की व्यक्तिगत मांग (Individual demand) की जानकारी है।

Scanned with CamScanner